

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 1

शिशु संस्कार बोध



घर-घर जागे सदसंस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार



आशीर्वचन

तेरापंथ समाज की एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है - ज्ञानशाला। इसके माध्यम से बालक-बालिकाओं में जैन तत्त्व विद्या को आत्मसात् कराने तथा सुसंस्कारों के बीजारोपण का प्रयास किया जाता है। यह गतिविधि बहुत निष्पत्तिपूर्ण प्रतीत हो रही है। जो पुरुष तथा महिला कार्यकर्ता इस गतिविधि के पवित्र संचालन में सहयोग देते हैं, वे बाल पीढ़ी के निर्माण में अपना योगदान देते हैं।

ज्ञानशाला को मैं अत्यंत उपयोगी मानता हूँ, इसलिए साधु-साध्वियाँ, समण श्रेणी, श्रावक-श्राविकाएँ -- सब इस गतिविधि को भावात्मक एवं क्रियात्मक यथोचित सहयोग देने का प्रयास करें।

शुभाशंसा।

5 मई, 2012
बालोतरा

आचार्य महाश्रमण

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी पाठ्यक्रम - भाग 1

शिशु संस्कार बोध



संपादन :

मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनूं)
मुनि उदित कुमार

प्रकाशन एवं नियोजन :

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ज्ञानशाला प्रकोष्ठ)

3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700001

फोन : (033) 2235 7956 / 2234 3598

इमेल : info@jstmahasabha.org

वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

संस्करण : 2016

घर-घर जागे सदसंस्कार : ज्ञानशाला का यह उपहार



- आज का शिशु ही कल का समाज है।
- माता-पिता का व्यवहार ही शिशु की संस्कारशाला है।
- धार्मिक संस्कारों से ही व्यवहार व अध्यात्म शुद्ध रह सकता है।
- शिशु अनुकरणप्रिय है। उसे जैसा बनाना चाहते हो, वैसा पहले खुद बनो।
- शिशु वह सर्वग्राही भूमि है, जिस पर सब प्रकार के बीज बोये जा सकते हैं।
- शिशु में असीम क्षमता है, उसे नजरअंदाज मत करो, उसके विकास में सहायक बनो।
- जन्म के समय शिशु न अपराधी है और न उपकारी। उसमें ये संस्कार यहीं से मिलते हैं।
- शिशु स्वयं में एक कोरा (सफेद) कागज होता है। उस पर चाहे जैसे संस्कारों के चित्र उकेरे जा सकते हैं।
- शिशु स्वयं में एक स्वच्छ आरिसा (कांच) है, जिसमें माता, पिता व पूरे परिवार के व्यवहार का प्रतिबिंब देखा जा सकता है।

— मंत्री मुनि सुमेरमल (लाडनू)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अनुक्रम	पृष्ठ
1.	ज्ञानशाला में प्रवेश	3
2.	जैन बालक की पहचान	5
3.	प्रेक्षाध्यान	6
4.	नमस्कार महामंत्र	8
5.	वंदन पाठ	10
6.	मंगल पाठ	12
7.	सामायिक	14
8.	तीर्थंकर परंपरा	16
9.	आचार्य परंपरा	17
10.	प्रश्नोत्तर	18
11.	उद्घोष (नारे)	22
12.	श्रेष्ठ बालक	24

SHISU SANSKAR BODH (VOLUME - 1)

Rs. 10/-

पाठ 1

ज्ञानशाला में प्रवेश

ENTRY IN GYĀNSHĀLĀ

आप ज्ञानशाला में आए हैं क्योंकि

- आप ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं।
- आप महान बनना चाहते हैं।
- आप धर्म का जीवन जीना चाहते हैं।
- आप शांति से जीना चाहते हैं।
- आप सबके बीच प्यारे बने रहना चाहते हैं।

आपको ध्यान रखना है

- ज्ञानशाला की कक्षा कब, कहां एवं किस समय लग रही है।
- आप समय पर पहुंच रहे हैं।
- आप ज्ञानशाला का अनुशासन रख रहे हैं।
- आप ज्ञानशाला के शिक्षकों का सम्मान कर रहे हैं।

प्रतिज्ञा

आपको प्रतिज्ञा दोहरानी है

मैं ज्ञानशाला का विद्यार्थी हूँ। मुझे ज्ञानशाला में भाग लेने का गौरव है। मैं ज्ञानशाला की गौरव-वृद्धि में सदैव जागरूक रहूंगा/रहूंगी। मैं अनुशासन का पालन करूंगा/करूंगी। मैं सत्यनिष्ठ एवं संयमनिष्ठ बनने के लिए प्रयत्नशील रहूंगा/रहूंगी। मैं व्यसन मुक्त जीवन जीऊंगा/जीऊंगी। मैं साधु-साध्वियों के प्रति विनम्र रहूंगा/रहूंगी। मैं अपने माता-पिता व अभिभावकों का आदर करूंगा/करूंगी।

YOU HAVE COME TO THE GYĀNSHĀLĀ BECAUSE

- You want to increase your knowledge.
- You want to become a great person.
- You want to lead a religious life.
- You want to lead a peaceful life.
- You want to be loved by everyone.

YOU MUST REMEMBER

- When, where and at what time the classes are being held.
- You must be punctual for the classes.
- You must maintain discipline in the Gyānshāla.
- You must respect the teachers of Gyānshāla.

PLEDGE

Repeat the Pledge

I am a student of Gyānshāla. I am proud to participate in the Gyānshāla. I will always be alert to ensure the dignity and importance of Gyānshāla. I will always try to be truthful and self-controlled. I will observe discipline. I will lead an addiction free life. I will be humble and respectful to Sadhus and Sadhvis. I will respect my parents and guardians.



आपको सीखना है

PLEASE LEARN

अर्ह वन्दना

Arham Vandanā

अर्ह - अर्ह की वंदना फले।
जीवन-विकास हो, मन में सुवास हो,
देखो दीपक से दीपक जले।

**Arham-arham ki vandanā phale.
Jivan-vikās ho, man men suvās ho
Dekho dipak se dipak jale.**

विद्या के पावन मन्दिर में
सच्ची शिक्षा हम पाएं,
सदाचार के सुन्दर पथ पर
कदम-कदम बढ़ते जाएं।
चाहे रात या प्रभात हो भले ॥1१॥

Vidyā ke pāvan mandir men
sacchi siksha ham pāyen,
Sadāchār ke sunder path par
kadam-kadam badhte Jāyen.
Chāhe rāt yā prabhāt ho bhale ॥1१॥

हम सारे हैं भाई-भाई
भ्रातृभाव से सदा बढ़ें,
अपना संयम अपने द्वारा
अनुशासन का पाठ पढ़ें।
कभी कोई न हमको छले ॥2॥

Ham sāre hain bhāi-bhāi
bhratribhav se sadā badhen,
Apnā sanyam apne dwārā
Anushāsan kā pāth padhen.
Kabhi koi na hamko chhale ॥2॥

हम हैं अपने भाग्यविधाता
खुद अपना निर्माण करें,
विद्या और विनय के द्वारा
युगधारा में प्राण भरें,
श्रम के सांचे में जीवन ढले ॥3॥

Ham hain apne bhāgyavidhātā
khud apnā nirmān karen,
Vidyā aur vinay ke dwārā
yugdhārā men prān bharen.
Shram ke sānche men Jivan dhale. ॥3॥

त्याग तपस्या के सौरभ से
मन उपवन को महकाएं,
धर्म, समाज, देश हित हम
सर्वस्व निछावर कर पाएं।
नित उजला प्रकाश निकले ॥4॥

Tyāg tapasyā ke saurabh se
man upvan ko mahkāyen,
Dharm, samāj, desh hit ham
sarvaswa nichhāwar kar pāyen.
Nīit ujalā prakāsh nikale ॥4॥

(तर्ज : रामजी की सेना चली)

(Tarj - Rāmji ki senā chali...)

पाठ 2

जैन बालक की पहचान

CHARACTERISTICS OF A JAIN CHILD

1. प्रतिदिन सवेरे सूर्योदय से पूर्व उठता है और रात्रि में जल्दी सोता है।
 2. प्रतिदिन प्रातःकाल नमस्कार महामन्त्र का कम से कम 27 बार जाप करता है।
 3. प्रतिदिन साधु दर्शन करता है।
 4. प्रातः माता-पिता को प्रणाम करता है।
 5. प्रतिदिन योग-आसन करता है।
 6. कभी गाली या अपशब्द का प्रयोग नहीं करता।
 7. बाजारू चीजें नहीं खाता एवं बार-बार नहीं खाता।
 8. बीड़ी, सिगरेट व शराब तथा गुटका, तंबाकू आदि का व्यसन नहीं करता।
 9. मांस, अण्डों व तत्तिमिश्रित वस्तुओं का सेवन नहीं करता।
 10. प्रतिदिन धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय करता है।
 11. अपना काम स्वयं करता है।
 12. रात्रि भोजन नहीं करने का प्रयास करता है।
 13. अश्लील साहित्य पढ़ने एवं अश्लील चलचित्र देखने से बचता है।
1. Gets up daily before sunrise in the morning and goes to bed early.
 2. Chants Namaskār Mahāmantra everyday in the morning at least 27 times.
 3. Visits monks for obeisance everyday.
 4. Bows down to parents daily in the morning.
 5. Does yogic exercise daily.
 6. Never utters filthy or abusive words.
 7. Never eats anything from street vendors and does not eat now and then.
 8. Does not smoke or take drinks and chew Gutka, tobacco etc.
 9. Does not take eggs, meat and things containing these.
 10. Reads religious books daily.
 11. Does his work himself.
 12. Tries not to take food after sunset.
 13. Avoids to read filthy books or see filthy films.

पाठ 3

प्रेक्षाध्यान

PREKSHA DHYAN

नमस्कार मुद्रा :

जीवन में अर्हताओं की प्राप्ति एवं विधायक भावों के निर्माण के लिए नमस्कार मुद्राएं पांच हैं :-

1. अर्ह मुद्रा - ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं
2. सिद्ध मुद्रा - ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं
3. आचार्य मुद्रा - ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं
4. उपाध्याय मुद्रा - ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं
5. मुनि मुद्रा - ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

त्रिपदी वंदना

- 'ॐ' उच्चारण के साथ सभी बालक-बालिकाएं एक साथ हाथ जोड़कर घुटनों के बल वंदना की मुद्रा में स्थिर हो जाएं और 'वन्दे' शब्द का उच्चारण करें।
- 'ह्रीं' का उच्चारण होते ही सभी बालक-बालिकाएं एक साथ 'अर्हम्.....' बोलते हुए जमीन तक मस्तक को झुकाएं और तब तक झुकाए रखें, जब तक 'श्रीं' का उच्चारण न हो जाए।

Namaskār Posture :

To achieve the divine power and to formulate positive thoughts there are five basic Namaskār postures, as given below :

1. **Arham Posture** - Om Hring Namō Arhantānam
2. **Sidh Posture** - Om Hring Namō Sidhānam
3. **Āchārya Posture** - Om Hring Namō Āyariyānam
4. **Upādhāyay Posutre** - Om Hring Namō Uvajjhāyānam
5. **Muni Posture** - Om Hring Namō Loye savvsahoonam

Eso panch Namukkāro,
Savv Pāvapanāsano.
Mangalānam ch savvesin,
Padhamam havai mangalam.

Tripadi Vandana

- Every child should keep his hands folded, kneel down and sit in the posture of Vandana. As the word 'Om...' is being pronounced, they should start chanting 'Vande...'
- As the word 'Hring...' is pronounced, every child should bend his head to the floor level chanting the word 'Arham...' and stay in the same posture till the word 'Shring' is heard.



- ❖ 'श्री' का उच्चारण होते ही सभी बालक-बालिकाएं मस्तक को ऊपर उठाते हुए पुनः वंदना की मुद्रा में लौट आएं। उपर्युक्त विधि से दूसरी बार 'वन्दे गुरुवरम्' एवं तीसरी बार 'वन्दे सच्चं' का उच्चारण किया जाए।
- ❖ On listening the word 'Shring', every child should return to the original Vandanā posture by lifting his head up to normal level. To repeat the same process two times more, replacing the word 'Arham' to Guruvaram' in the second round and 'Sachham' in the final third round.

महाप्राण ध्वनि

- ❖ सुखासन (पालथी) में कमर को सीधी रखकर बैठें। शरीर को हिलाएं-डुलाएं नहीं। धीरे-धीरे श्वास को पूरा भरें। फिर भ्रमर की तरह नाक से गुंजन करें। मुंह को बन्द रखें। इसे महाप्राण ध्वनि कहते हैं।

Mahāprān Dhvani

(The eloquation of Mahāprāna)

- ❖ Sit in the normal posture of Sukhāsan, keeping the back straight, slowly take a long Breath. Now speak like humming through nose like bumble bee. Keep the lips tight. This is called Mahāprān Dhvani.

पाठ 4

नमस्कार महामंत्र

NAMASK R MAH MANTRA

नमस्कार महामंत्र जैन धर्म का सबसे प्राचीन मंत्र है। इस महामंत्र में किसी व्यक्ति विशेष को नहीं, महान आत्माओं को नमस्कार किया गया है। वे महान आत्माएं पांच प्रकार की होती हैं - अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु।

Namaskār Mahāmantra is the oldest Mantra of Jain religion. In this mantra, obeisance is paid to the highly elevated souls only and not to any specific person. These great souls can be categorised under the five groups. Arhant, Siddha, Āchārya, Upādhyāy and Sādhus.

णमो अरहंताणं	अरहंतों को मेरा नमस्कार	Namo Arahantānam	Obeisance to the ARHANTAS ¹
णमो सिद्धाणं	सिद्धों को मेरा नमस्कार	Namo Siddhānam	Obeisance to the SIDDHAS ²
णमो आयरियाणं	धर्माचार्यों को मेरा नमस्कार	Namo Āyariyānam	Obeisance to the ACHARYAS ³
णमो उवज्जायाणं	उपाध्यायों को मेरा नमस्कार	Namo Uvajjhāyānam	Obeisance to the UPADHYAYAS ⁴
णमो लोए सव्वसाहूणं	लोक के सब साधुओं को मेरा नमस्कार	Namo loe Savvasahoonam	Obeisance to the SADHUS ⁵ of the Universe.

महामंत्र का महत्व

IMPORTANCE OF MAHAMANTRA

एसो पंच णमुक्कारो,	यह पंच नमस्कार महामंत्र	Eso Panch Namukkāro,	This five fold obeisance
सव्व पावपणासणो।	सब पापों का विनाशक है।	Savv Pāvapanāsano	Annihilates all sins.
मंगलाणं च सव्वेसिं,	यह सब मंगलों में	Mangalānam ch Savvesin,	Of all auspices this is
पढमं हवइ मंगलं।।	प्रथम-सर्वोत्तम है।	Padhamam Havai Mangalam	Foremost (Unique and sublime).



आपको करना है

Please do -

- | | |
|--|--|
| 1. नमस्कार महामंत्र को अर्थ सहित एवं शुद्ध उच्चारण के साथ सीखें। | 1. Learn the Namaskār Mahāmantra along with its meaning and pronunciation. |
| 2. आपको प्रतिदिन प्रातः कम से कम पांच बार बोलना है। | 2. You must recite it at least five times every morning. |

1. Adorables 2. Emancipated 3. Spiritual Leaders 4. Preceptores 5. Monks

पाठ 5

वंदन पाठ

VANDAN PĀTH

गुरु को वंदन-नमस्कार करना हमारा पहला कर्तव्य है। वंदन करने की सबकी अपनी-अपनी विधि होती है। जैन धर्म-तेरापंथ में वंदन की विधि निम्न प्रकार की है। इसे पंचांग वंदना विधि कहते हैं।

Our first duty is to do namaskār to our Guru. Every sect has their own technique of doing Vandana. The technique in the Terāpanth sect is as below. This is called 'Panchāng Vandana'.

तिक्खुत्तो	तीन बार
आयाहिणं	दाई से बाई ओर
पयाहिणं	प्रदक्षिणा
करेमि	करता हूँ
वंदामि	स्तुति करता हूँ
नमंसांमि	नमस्कार करता हूँ
सक्कारेमि	सत्कार करता हूँ
सम्मणेमि	सम्मान करता हूँ
कल्लाणं	आप कल्याणकारी हैं
मंगलं	मंगलकारी हैं
देवयं	धर्मदेव हैं
चेइयं	ज्ञानवान हैं
पज्जुवासामि	आपकी उपासना करता हूँ
मत्थाएण	मस्तक झुकाकर
वंदामि	वंदना करता हूँ।

Tikkhutto	Three times
Āyāhinam	From right to left
Payāhinam	Circumambulating
Karemi	Do
Vandāmi	I adore
Namansāmi	Make obeisance
Sakkāremi	Revere
Sammānemi	And respect you
Kallānam	The auspicious
Mangalām	The absolute good
Devayam	The embodiment of religion
Cheyam	And the trully learned
Pajjuvāsami	I pray to you
Matthaen	Honour you with head
Vandāmi	Bowed down.



विधि

वंदना करते समय दोनों हाथ जोड़कर दाईं से बाईं ओर नाभि की दाहिनी तरफ से मस्तक के अग्र भाग तक तीन प्रदक्षिणा देते हुए वंदना की मुद्रा में बैठें, फिर 'वंदामि....' पाठ बोलें। अंत में जब 'मत्थाएण वंदामि' कहें तब पंचांग मुद्रा (दोनों घुटने, दोनों हाथ एवं मस्तक जमीन तक झुकाना) में नमस्कार करना चाहिए। इस तरह तीन बार वंदना करने के बाद खड़े होकर यह बोले - 'वंदे गुरुवरम् / मुनिवरम् / सतीवरम्! हाथ जोड़कर अर्ज करूं आपके तनु रत्न में सुखसाता है।'

तनु अर्थात् शरीर, रत्न अर्थात् रत्नत्रय - ज्ञान, दर्शन, चारित्र।

आपको करना है

1. वंदन-पाठ शुद्ध उच्चारण सहित सीखना है।
2. आपको विधि सहित वंदना सीखनी है।
3. आपको गुरु / साधु-साध्वियों की विधि सहित वंदना करनी है।

आपको ध्यान रखना है

1. वंदना करते समय परस्पर बात व मजाक न करें।
2. खुले मुंह वंदना न करें।
3. वंदना करते समय हाथ, रूमाल या मुंहपत्ती का प्रयोग करना चाहिए।

TECHNIQUE

While doing the Vandanā, fold both the hands and revolve them three times from right to left side, then kneel down and say the 'Vandami....' While saying 'Matthaen Vandāmi', bow your head down and touch the ground with it. In this way, say the Vandanā three times and standing up say - 'Vande Guruwaram / Munivaram / Sativaram! Hāth jodkar Arja Karoon Āpke Tanu Ratna men Sukhasātā Hai'.

Tanu means body, Ratna means three precious virtues - knowledge, philosophy and character.

You have to do

1. Learn the Vandan-path (lesson) with its meaning and correct pronunciation.
2. Learn the technique of doing Vandanā.
3. Perform the Vandanā for Sādhus / Sādhvis technically.

You must take care

1. During Vandanā, do not talk amongst yourself nor laugh.
2. Not to do Vandanā without covering the mouth.
3. To use hand, handkerchief or muhapatti while doing Vandanā.

पाठ 6

मंगल पाठ

MANGAL PATH

जैन धर्म में मंगल पाठ को नमस्कार मंत्र की तरह ही मंगल मंत्र माना जाता है। प्रत्येक प्राणी मंगल चाहता है। वह उसके लिए प्रयास भी करता है। यह मंगल पाठ बड़ा ही शक्तिशाली मंत्र है। इसमें अरहंत, सिद्ध, साधु और धर्म को मंगल कहा गया है।

In Jain Dharma, Mangal Pāth is also considered as auspicious as the Namaskār Mahāmantra. Every Person wants auspiciousness. He tries best for it. This Mangal Pāth is a very powerful Mantra. In this pāth, the adorables, the emancipated, the monks and the religion are all said to be auspicious.

चत्तारि मंगलं	चार मंगल हैं—	Chattāri Managalam	There are four auspicious ones –
अरहंता मंगलं	अरहंत मंगल है	Arahantā mangalam	the ARHANTAS are auspicious.
सिद्धा मंगलं	सिद्ध मंगल हैं	Siddha mangalam	the SIDDHAS are auspicious
साहू मंगलं	साधु मंगल हैं	Sahoo mangalam	the SADHUS are auspicious
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं	केवली भाषित धर्म मंगल है।	Kevali pannatto dhammo mangalam	the DHARMA preached by the KEVALIS is auspicious.
चत्तारि लोगुत्तमा	चार लोक में उत्तम हैं –	Chattāri loguttamā	There are four best ones in the Universe –
अरहंता लोगुत्तमा	अरहंत लोक में उत्तम हैं	Arahantā loguttamā	the ARHANTAS are the best
सिद्धा लोगुत्तमा	सिद्ध लोक में उत्तम हैं	Siddha loguttamā	the SIDDHAS are the best
साहू लोगुत्तमा	साधु लोक में उत्तम है	Sahoo loguttamā	the SADHUS are the best
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो	केवली भाषित धर्म लोक में उत्तम है।	Kevali pannatto dhammo loguttamo	the DHARMA preached by the KEVALIS is the best.



चत्तारि सरणं पवज्जामि	मैं चारों की शरण में जाता हूँ -	Chattāri saranam pavajjami	I take refuge in all the four -
अरहंते सरणं पवज्जामि	मैं अरहंतों की शरण में जाता हूँ	Arahante saranam pavajjāmi	I take refuge in the ARHANTAS
सिद्धे सरणं पवज्जामि	मैं सिद्धों की शरण में जाता हूँ	Siddhe saranam pavajjāmi	I take refuge in the SIDDHAS
साधू सरणं पवज्जामि	मैं साधु की शरण में जाता हूँ	Sahoo saranam pavajjāmi	I take refuge in the SADHUS
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि	मैं केवली भाषित धर्म की शरण में जाता हूँ।	Kevali pannattam dhammam saranam pavajjāmi	I take refuge in the Dharma preached by the KEVALIS.

आपको करना है -

1. मंगल पाठ शुद्ध उच्चारण सहित सीखना है।
2. साधु-साध्वियों के दर्शन करें तब मंगल पाठ सुनें।

Please do -

1. You have to learn the Mangal Pāth with the correct pronunciation.
2. Please listen to the Mangal Pāth when doing darshan (paying vandana) to the sadhus-sadhvis.

आपको ध्यान रखना है -

1. यात्रा करने से पूर्व मंगलपाठ सुनें।
2. विशेष प्रयोजन होने पर ही मंगलपाठ सुनें।
3. साधु-साध्वियां न हों तो स्वयं पाठ बोलें।

Please remember -

1. Please listen to Mangal Pāth before any journey.
2. Please listen to Mangal Pāth on special occassion.
3. In absence of sadhu-sadhvis, please speak yourself Mangal Pāth

पाठ 7

सामायिक

SĀMĀYIK

जैन धर्म में सामायिक का बहुत महत्व माना गया है। जिस व्रत से समता का लाभ होता है, उसे सामायिक व्रत कहते हैं। समता के संकल्प को स्वीकार करने के लिए सामायिक पाठ पढ़ा जाता है। सामायिक का कालमान 1 मुहूर्त अर्थात् 48 मिनट होता है।

Sāmāyik is very important in Jain Dharma. Sāmāyik is that in which equanimity is practiced and benefits are obtained. To practice and adhere to equanimity, the pāth of sāmāyik are being read. The duration of sāmāyik is 48 minutes which is called one muhoortt.

लेने की विधि

LENE KI VIDHI

करेमि भंते !	करता हूँ भगवान् !	Karemi Bhante!	Venerable Sir! take to
सामाइयं	सामायिक	Sāmāiyam	Sāmāyika
सावज्जं जोगं	सावद्य योग का	Sāvajjam Jogam	All the sinful activities
पच्चक्खामि	प्रत्याख्यान करता हूँ	Pachchakkhāmi	I vow to abstain from
जावनियमं	सामायिक का जितना काल है	Jāvaniyamam	For the period prescribed
(मुहुत्तं एगं)	(एक मुहूर्त तक)	(Muhuttam egam)	(One muhoortt)
पज्जुवासामि	पालन करता हूँ	pajjuvāsāmi	(will) observe it
दुविहं	दो करण,	Duviham	by two modes and
तिविहेणं	तीन योग से	Tivihenam	three ways.
न करेमि,	न करूंगा,	Na Karemi	Neither I will do
न कारवेमि	न कराऊंगा	Na Kāravemi	nor cause others to do
मणसा, वयसा,	मन से, वचन से,	Manasā, Vayasā,	by mind, speech
कायसा	शरीर से, उन पूर्वकृत	Kāyasā	and body.
तस्स भंते !	सावद्य योगों से भगवान् !	Tass Bhante!	Venerable Sir!
पडिक्कमामि	निवृत्त होता हूँ	Padikkamāmi	I shun sinful activities
निंदामि	उनकी निन्दा करता हूँ	Nindāmi	I censure them
गरिहामि	उनकी गर्हा करता हूँ	Garihāmi	I reprimand them
अप्पाणं	आत्मा को (पाप से)	Appānam	I am detaching
वोसिरामि	दूर करता हूँ।	Vosirāmi	my soul (from all sins).

पाठ 8

तीर्थकर परंपरा

TIRTHANKARAS

साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूपी धर्मशासन को तीर्थ कहा जाता है। उसकी स्थापना करने वाले तीर्थकर या अरहंत कहलाते हैं। तीर्थकर चौबीस हुए हैं -

1. भगवान श्री ऋषभ प्रभु
2. भगवान श्री अजित प्रभु
3. भगवान श्री संभव प्रभु
4. भगवान श्री अभिनंदन प्रभु
5. भगवान श्री सुमति प्रभु
6. भगवान श्री पद्म प्रभु
7. भगवान श्री सुपार्श्व प्रभु
8. भगवान श्री चन्द्र प्रभु
9. भगवान श्री सुविधि प्रभु
10. भगवान श्री शीतल प्रभु
11. भगवान श्री श्रेयांस प्रभु
12. भगवान श्री वासुपूज्य प्रभु
13. भगवान श्री विमल प्रभु
14. भगवान श्री अनन्त प्रभु
15. भगवान श्री धर्म प्रभु
16. भगवान श्री शान्ति प्रभु
17. भगवान श्री कुन्थु प्रभु
18. भगवान श्री अर प्रभु
19. भगवान श्री मल्लि प्रभु
20. भगवान श्री मुनिसुव्रत प्रभु
21. भगवान श्री नमि प्रभु
22. भगवान श्री अरिष्टनेमि प्रभु
23. भगवान श्री पार्श्व प्रभु
24. भगवान श्री महावीर प्रभु

आपको करना है -

1. चौबीस तीर्थकरों के नाम क्रम से सीखने हैं।

The Sādhu - Sādhvi and Shravak - Shravikā these four fold foundation in the religion is called Tirth. One who establishes these four fold foundation is called Tirthankar or Arihant. There had been twenty-four Tirthankaras -

1. Bhagavan Shri Rishabh Prabhu
2. Bhagavan Shri Ajit Prabhu
3. Bhagavan Shri Sambhav Prabhu
4. Bhagavan Shri Abhinandan Prabhu
5. Bhagavan Shri Sumati Prabhu
6. Bhagavan Shri Padma Prabhu
7. Bhagavan Shri Supārshva Prabhu
8. Bhagavan Shri Chandra Prabhu
9. Bhagavan Shri Suvidhi Prabhu
10. Bhagavan Shri Shital Prabhu
11. Bhagavan Shri Shreyans Prabhu
12. Bhagavan Shri Vāsupujya Prabhu
13. Bhagavan Shri Vimal Prabhu
14. Bhagavan Shri Anant Prabhu
15. Bhagavan Shri Dharm Prabhu
16. Bhagavan Shri Shanti Prabhu
17. Bhagavan Shri Kunthu Prabhu
18. Bhagavan Shri Ar Prabhu
19. Bhagavan Shri Malli Prabhu
20. Bhagavan Shri Munisuvrat Prabhu
21. Bhagavan Shri Nami Prabhu
22. Bhagavan Shri Arishtanemi Prabhu
23. Bhagavan Shri Pārshva Prabhu
24. Bhagavan Shri Mahāvīr Prabhu

Please Do -

1. Please learn the names of all the 24 Tirthankars in proper sequence.

पाठ 9

आचार्य परंपरा

TRADITION OF ĀCHĀRYA

धर्म समुदाय के मुखिया आचार्य होते हैं। तेरापंथ में वर्तमान आचार्य ही अपना उत्तराधिकारी बनाते हैं। तेरापंथ की आचार्य परंपरा इस प्रकार है : -

The head of religion sect is Āchārya. Current Āchārya only nominates his successor in Terāpanth. The various Āchāryas of Terāpanth are as follows :-

1. आचार्य श्री भीखण जी
2. आचार्य श्री भारमल जी
3. आचार्य श्री रायचन्द जी
4. आचार्य श्री जीतमल जी
5. आचार्य श्री मघराज जी
6. आचार्य श्री माणकलाल जी
7. आचार्य श्री डालचन्द जी
8. आचार्य श्री कालूराम जी
9. आचार्य श्री तुलसी जी
10. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी
11. आचार्य श्री महाश्रमण जी

1. Āchārya Shri Bhikhan ji
2. Āchārya Shri Bhāramal ji
3. Āchārya Shri Rāyachand ji
4. Āchārya Shri Jitmal ji
5. Āchārya Shri Magharāj ji
6. Āchārya Shri Mānaklal ji
7. Āchārya Shri Dālchand ji
8. Āchārya Shri Kalurām ji
9. Āchārya Shri Tulsi ji
10. Āchārya Shri Mahāpragya ji
11. Āchārya Shri Mahāshraman ji

आपको करना है -

Please Do -

1. सभी आचार्यों का नाम क्रम से सीखना है।

1. Please learn the names of all Āchāryas in proper sequence.



प्रश्न 7. तेरापंथ के संस्थापक कौन थे?

उत्तर - आचार्य भिक्षु तेरापंथ के संस्थापक थे।

Q. 7. Who was the founder of Terāpanth?

Ans. Āchārya Bhikshu was the founder of Terāpanth.

प्रश्न 8. हमारे देव कौन हैं?

उत्तर - अरहंत भगवान महावीर स्वामी हमारे देव हैं।

Q.8. Who is our deity?

Ans. Arhant Bhagwān Mahāvīr is our deity.

प्रश्न 9. हमारे गुरु कौन हैं?

उत्तर - आचार्य श्री महाश्रमणजी हमारे गुरु हैं।

Q. 9. Who is our Guru?

Ans. Āchārya Shri Mahāshramanji is our Guru.

प्रश्न 10. हमारा धर्म कौन-सा है?

उत्तर - जैन श्वेताम्बर तेरापंथ।

Q. 10. Name our Religion.

Ans. Jain Swetāambar Terāpanth.

प्रश्न 11. हमारी महाश्रमणी कौन हैं?

उत्तर - साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी।

Q. 11. Who is our Mahāshramani?

Ans. Sādhvi Pramukhā Kanak Prabhā ji.

प्रश्न 12. आचार्य श्री तुलसी ने कौन-सा नैतिक आंदोलन चलाया?

उत्तर - अणुव्रत आंदोलन।

Q. 12. Which moral Movement was started by Āchārya Shri Tulsi?

Ans. Anuvrat Movement.

प्रश्न 13. आचार्य महाप्रज्ञ ने किस ध्यान प्रणाली को शुरू किया?

उत्तर - प्रेक्षाध्यान।

Q. 13. Which technique of meditation was started by Āchārya Shri Mahāpragya?

Ans. Prekshā Dhyān.



प्रश्न 14. तेरापंथ के साधु-साध्वियों को नमस्कार करने के लिए क्या कहना चाहिए?

उत्तर - 'मत्थएण वंदामि'।

Q. 14. What should we say when we bow down before Terāpanth Jain monks or nuns.

Ans. We should say 'Matthayena Vandāmi'.

प्रश्न 15. समण-समणियों को नमस्कार करने के लिए क्या कहना चाहिए?

उत्तर - 'वंदामि नमंसांमि'।

Q. 15. What should we say when we meet Jain Samans or Samanis?

Ans. 'Vandāmi Namansāmi'.

प्रश्न 16. जैन पद्धति में अभिवादन के लिए क्या शब्द प्रयुक्त किया जाता है?

उत्तर - 'जय - जिनेन्द्र' या 'ॐ अर्हम्'।

Q. 16. What particular word do Jains use to greet each other?

Ans. To greet each other Jains use 'Jaya Jinendra' or 'Om Arham.'

प्रश्न 17. क्या तेरापंथ मूर्तिपूजा में विश्वास करता है?

उत्तर - विश्वास नहीं करता है।

Q. 17. Does Terāpanth believe in idol worship?

Ans. No, it does not.

प्रश्न 18. साधु लोग अपने मुंह पर क्या बांधते हैं?

उत्तर - मुखवस्त्रिका।

Q. 18. What do the monks tie on their mouths?

Ans. Mukha Vastrikā.

प्रश्न 19. साधु के साथ हमेशा साथ रहने वाली वस्तु क्या है?

उत्तर - रजोहरण (ओघा)

Q. 19. What does the sādhu have to carry with him all the time?

Ans. Rajoharan or Oghā.

प्रश्न 20. साधु आहार-भोजन किसमें करते हैं?

उत्तर - काष्ठ से निर्मित पात्र में।

Q. 20. In which vessel monks take food?

Ans. Pātra (vessel) made of wood.



प्रश्न 21. श्वास कहां से लेना चाहिए?

उत्तर - नाक से।

Q. 21.How should you breathe?

Ans. From our nose.

प्रश्न 22. कैसे बैठना चाहिए?

उत्तर - रीढ़ एवं गर्दन सीधी रखते हुए बैठना चाहिए।

Q. 22.How must you sit?

Ans. We must sit with the vertebral column and the neck straight.

प्रश्न 23. सही तरीके से चलने से क्या लाभ है?

उत्तर - शक्ति बढ़ती है।

Q. 23.What is the benefit of walking in the right way?

Ans. We consume power.

प्रश्न 24. सही तरीके से खड़ा रहने से क्या लाभ है?

उत्तर - स्फूर्ति आती है।

Q. 24.What is the benefit of standing in the rightway?

Ans. We get energy.

प्रश्न 25. सही तरीके से सोने से क्या लाभ है?

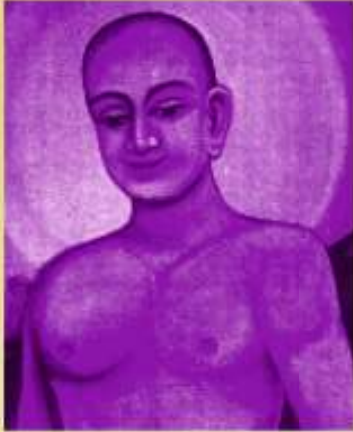
उत्तर - पूरा आराम मिलता है।

Q. 25.What is the benefit of sleeping in the rightway?

Ans. Get complete rest.



- | | |
|---|---|
| 13. गुरु भिक्षु ने क्या दिखलाया
तेरापंथ, तेरापंथ। | 13. Guru Bhikshu Ne Kyā Dikhlāyā
Terāpanth, Terāpanth. |
| 14. जयाचार्य ने क्या बतलाया
मर्यादा और अनुशासन। | 14. Jayāchārya Ne Kyā Batlāyā
Maryādā Aur Anushāsan. |
| 15. आलोकित नभ धरा दिगन्त
हे प्रभो ! यह तेरापंथ। | 15. Alokit Nabh Dharā Digant
He Prabho! Yah Terāpanth. |
| 16. सादा जीवन उच्च विचार
मानव जीवन का शृंगार। | 16. Sādā Jivan Uchch Vichār
Mānav Jivan Kā Shringar. |
| 17. कैसे बदले जीवन धारा
प्रेक्षा ध्यान साधना द्वारा। | 17. Kaise Badle Jivan Dhārā
Prekshā Dhyān Sādhanā Dvārā. |
| 18. अणुव्रतों का यह संदेश
व्यसन मुक्त हो सारा देश। | 18. Anuvraton Kā Yah Sandesh
Vyasnmukt Ho Sārā Desh |
| 19. निज पर शासन फिर अनुशासन। | 19. Nij Par Shāsan Phir Anushāsan. |
| 20. संघ पुरुष चिरायु हो। | 20. Sangh Purush Chirāyu Ho. |
| 21. घर-घर जागे सद्संस्कार
ज्ञानशाला का यह उपहार। | 21. Ghar-Ghar Jāge Sadsanskār
Gyānshālā Kā Yah Uuphār. |



शिक्षा के दो रूप हैं - ग्रहण शिक्षा, आसेवन शिक्षा।
सूत्र-पाठ का शुद्ध उच्चारण व उसका अर्थबोध ग्रहण
शिक्षा है। जो कुछ सुना, समझा व याद किया, उसे
जीवन में उतारना आसेवन शिक्षा है।

वृक्ष की जड़ सूख जाने पर शाखा-प्रशाखा
सब कुछ सूख जाती है। व्यक्ति के भीतर से
विनय का गुण निकल जाने पर सब गुण
समाप्त हो जाते हैं।

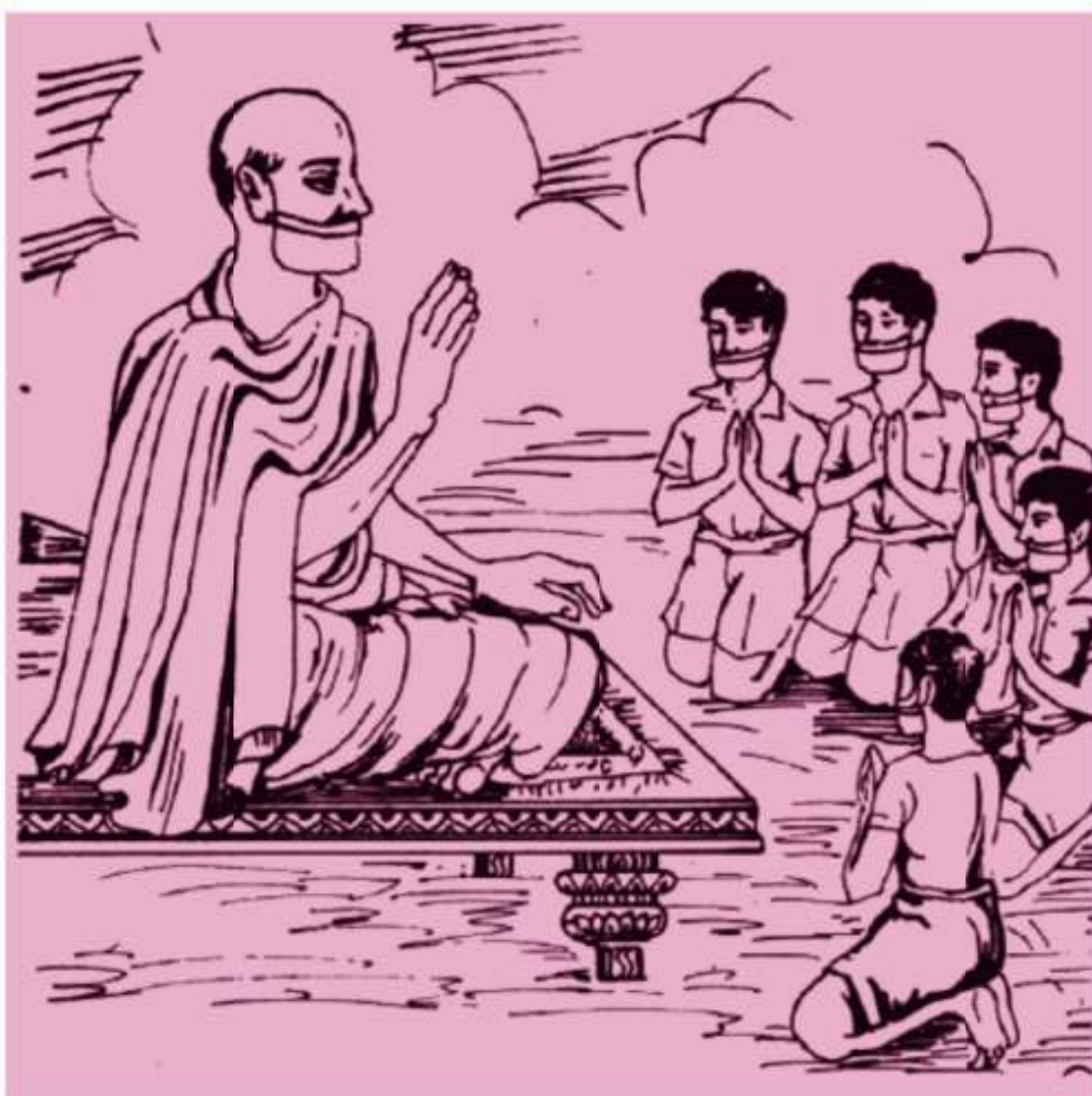


विद्यार्थी जीवन ही, सारे जीवन की नींव।
दिखलाना है तुम्हें देश को, जो आदर्श सजीव।।
विद्या और विनय का संयोग सोने में सुगंध है।

चारों ओर विकृति के संस्कार हावी हैं। नैतिक मूल्यों को
झकझोरने वाले साधन भी प्रचुर मात्रा में हैं। लौकिक विद्या के
साथ भोगवाद का क्रम भी तीव्र गति से बढ़ रहा है। ऐसे में
ज्ञानशाला एक शक्तिशाली उपक्रम है।

- ज्ञानशाला को आधुनिक एवं वैज्ञानिक रूप दिया जाए।
- आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि का विकास हो।
- उसमें तत्त्व व दर्शन के साथ आचार संहिता भी जोड़ी जाए।
- ज्ञानशाला मात्र शिक्षण का उपक्रम ही नहीं जीवन विज्ञान है।





युग पुरुष के अमृत बिन्दु

शिक्षा की दुर्गति या असद्गति देख मेरे मन में बच्चों को संस्कारी बनाने की बार-बार आ रही है। संस्कारों के बिना शिक्षा केवल भार बन जाएगी। गधे पर चंदन का भार डाल दिया जाए तो वह भार का ही अनुभव करेगा सुगन्ध का नहीं।

प्रत्येक अभिभावक को अपने बालकों को लौकिक शिक्षा के साथ-साथ संस्कारी बनाने के लिए ज्ञानशाला एवं आध्यात्मिक शिविरों में अवश्य भेजना चाहिए।

- आचार्य तुलसी